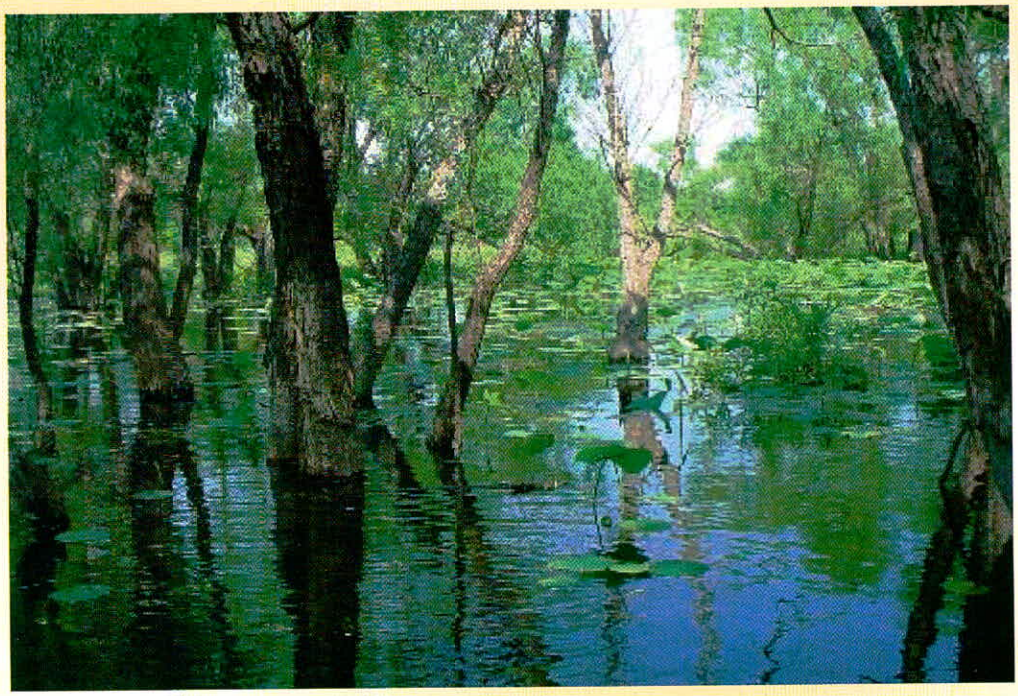

जैवविविधता का स्वर्ग : नम भूमियां

नवनीत कुमार गुप्ता

प्रकृति अपने विविध रूपों में हमारे पृथ्वी ग्रह को सुंदर बनाए हुए है। नम भूमियां प्रकृति का ऐसा ही अनोखा और अनुपम रूप है। असल में नम भूमि नमी या दलदला क्षेत्र होते हैं जो अपनी अनोखी, पारिस्थितिकी के कारण महत्वपूर्ण हैं। नम भूमियों के अंतर्गत झीलें, तालाब, दलदली क्षेत्र, हौज, कुण्ड, पोखर एवं तटीय क्षेत्रों पर स्थित मुहाने, लगून, खाड़ी, ज्वारीय क्षेत्र, प्रवाल क्षेत्र, मैंग्रोव वन आदि क्षेत्र शामिल होते हैं। गुजरात का नलसरोहर, उड़ीसा की चिल्का झील और भितरकनिका मैंग्रोव क्षेत्र, राजस्थान का केवलादेव पक्षी विहार, दिल्ली का ओखला पक्षी अभयारण्य आदि नम भूमियों के कुछ उदाहरण हैं।

नम भूमि का अर्थ है नमी या दलदला क्षेत्र। नम भूमि की मिट्टी झील, नदी, विशाल तालाब के किनारे का हिस्सा होता है जहां भरपूर नमी पाई जाती है। इसके कई लाभ भी हैं। नम भूमि जल को प्रदूषण से मुक्त बनाती है। नम भूमि वह क्षेत्र कहलाता है जिसका सारा या थोड़ा भाग वर्ष भर जल से भरा रहता है। भारत में नम भूमि ठंडे और शुष्क इलाकों से होकर मध्य भारत के कटिबंधीय मानसूनी इलाकों और दक्षिण के नमी वाले इलाकों तक फैली हुई है। हमारे देश में दक्षिण प्रायद्वीप में उपस्थित नम भूमि अधिकतर मानव निर्मित हैं जिन्हें 'येरी' यानी हौदी कहते हैं। यह येरी मानव आवश्यकताओं के लिए जल उपलब्ध कराती हैं।

भारत में नम भूमियां

नम भूमियां भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.63 प्रतिशत क्षेत्रफल यानी कुल 15,26,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर फैली हुई हैं। इनके अलावा 2.25 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल से कम आकार वाली करीब 5,55,557 छोटी-छोटी नम भूमियों के रूप में चिन्हित किया गया है, इनका भी अपना विशेष महत्व है। वैसे कुल नम भूमियों में से 69.22 प्रतिशत क्षेत्र आंतरिक नम भूमियों द्वारा आच्छादित है जबकि, तटीय नम भूमियों का प्रतिशत 27.13 है।

प्राकृतिक संतुलन में नम भूमियों की भूमिका

नम भूमियों के असंख्य लाभों के कारण ये हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। असल में नम भूमि की मिट्टी, झील, नदी, विशाल तालाब या किसी नमीयुक्त किनारे का हिस्सा

नम भूमियां भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.63 प्रतिशत क्षेत्रफल यानी कुल 15,26,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर फैली हुई हैं।

नम भूमि पानी में मौजूद तलछट और पोषक तत्वों को अपने में समा लेती है और सीधे नदी में जाने से रोकती है।

नम भूमि तलछट का काम करती है जिससे बाढ़ जैसी विपदा में कमी आती है। नम भूमि पानी को सहेजे रखती है।

होती है जहां भरपूर नमी पाई जाती है। इसके कई लाभ भी हैं। भूमिगत जल स्तर को बढ़ाने में भी नम भूमियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अलावा नम भूमि जल को प्रदूषण से मुक्त बनाती है।

बाढ़ नियंत्रण में भी इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। नम भूमि तलछट का काम करती है जिससे बाढ़ जैसी विपदा में कमी आती है। नम भूमि पानी को सहेजे रखती है बाढ़ के दौरान नम भूमियां पानी का स्तर कम बनाए रखने में सहायक होती हैं। इसके अलावा नम भूमि पानी में मौजूद तलछट और पोषक तत्वों को अपने में समा लेती है और सीधे नदी में जाने से रोकती है। इस प्रकार झील, तालाब या नदी के पानी की गुणवत्ता बनी रहती है। समुद्री तटरेखा को स्थिर बनाए रखने में भी नम भूमियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये समुद्र द्वारा होने वाले कटाव से तटबंध की रक्षा करती हैं। नम भूमियां समुद्री तूफान और आंधी के प्रभाव को सहन करने की क्षमता रखती हैं। नम भूमियां पानी के संरक्षण का एक प्रमुख स्रोत हैं।

जैवविविधता का स्वर्ग

नम भूमियां जैवविविधता संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। नम भूमियां बहुत सारे जीवों का ठिकाना हैं। हमारे देश की पारिस्थितिकी सुरक्षा में इन नम भूमियों की अहम् भूमिका है। खाद्यान्नों की कमी और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरों के बीच हमें नम भूमियों को बचाने की जरूरत है ताकि वे अपनी पारिस्थितिकी

नम भूमियां जैवविविधता संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। नम भूमियां बहुत सारे जीवों का ठिकाना हैं। हमारे देश की पारिस्थितिकी सुरक्षा में इन नम भूमियों की अहम् भूमिका है।

भूमिका निभा सकें। नम भूमियां जैवविविधता को सुरक्षित रखती हैं।

नम भूमियां शीतकालीन पक्षियों और विभिन्न जीव-जंतुओं का आश्रय स्थल होती हैं। विभिन्न प्रकार की मछलियां और जंतुओं के प्रजनन के लिए भी ये उपयुक्त होती हैं। इन नम भूमियों पर विशेष मौसम में कई पक्षी आते हैं। नम भूमियां प्रवासी पक्षियों की पनाहस्थली के रूप में विख्यात् हैं। ऐसे क्षेत्र पट्ट शीर्ष राजहंस, पनकौआ, बायर्स वॉचार्ड, ओस्प्रे, इंडियन स्किम्मर, श्याम गर्दनी बगुला, संगमरमरी टील, बंगाली फ्लोरीकॉन पक्षियों का मनपसंद स्थल होते हैं।

पक्षियों का कलरव और रंग रूप, हमेशा से ही पक्षी निहारकों को इन नम भूमियों की ओर आकर्षित करते रहे हैं। ये नम भूमियां जैव विविधता के मामले में बहुत धनी होती हैं। भरतपुर स्थित केवलादेव पक्षी विहार कई प्रवासी पक्षियों का पसंदीदा स्थल है।

आर्थिक महत्व

नम भूमियां अपने आस-पास बसी मानव बस्तियों के लिए जलावन लकड़ी, फल, वनस्पतियां, पौष्टिक चारा और जड़ी-बूटियों की स्रोत होती हैं। कमल, जो कि दुनिया के कुछ विशेष सुंदर फूल होने के साथ ही भारत का राष्ट्रीय फूलों में से एक है, नम भूमियों में उगता है। नम भूमियां अपने आस-पास अनेक ऐसी वनस्पतियों और जीवों को आश्रय प्रदान करती हैं जो आर्थिक विकास में सहायक होते हैं। नम भूमि विविधता से परिपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र का द्योतक है।

अनोखी नम भूमि लॉकटक झील

मणिपुर की लॉकटक झील देशी और विदेशी सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इस झील को दुनिया भर में अपनी तरह का अकेला 'तैरता वन्य प्राणी विहार' का दर्जा हासिल है। लेकिन प्रदूषण के चलते अब इसमें हानिकारक खरपतवार उग रहे हैं। पारिस्थितिकी दृष्टि से यह झील अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस झील में एक तैरता पौधा उगता है जिसे 'बुल लामजाओ खरपतवार' या 'फुमड़ी' कहते हैं। यह पौधा केवल यहीं उगता है और कहीं नहीं। इस पौधे पर एक हिरण की प्रजाति पलती है जिसे पिगमी हिरण (संगाई) कहा जाता है। फुमड़ी पौधे की संख्या कम हो जाने से इस हिरण की संख्या भी कम होने लगी है। इनकी संख्या 100 से कम हो गई है।

नम भूमियों पर मंडराते खतरे

वर्तमान में भारत की बहुत-सी नम भूमियों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। नम भूमियां प्रदूषण के कारण संकट में हैं। तेजी से बढ़ते कंक्रीट के जंगल, उद्योग, शहरीकरण के लिए जलग्रहण क्षेत्र से छेड़खानी, हजारों

नम भूमियां व्यापक स्तर पर आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक आधार रही हैं।

कई सारी वनस्पतियों, सरीसृपों, पक्षियों और जनजातियों आदि की निवास स्थली नम भूमियों के बढ़ते प्रदूषण, बिगड़ती जलवायु, विकास के दुष्परिणामों आदि के कारण अपना स्वरूप खोती जा रही हैं।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी तक 15 राज्यों में 27 नम भूमि क्षेत्र चिन्हित किए गए हैं।

भारत में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहां नमभूमियों की बर्बादी के साथ ही जंगली जानवरों या पौधों पर संकट मंडरा रहा है।

टन रेत का जमाव और कृषि रसायनों के जहरीले पानी का आ मिलना नम भूमियों की बर्बादी का कारण है।

भारत में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहां नमभूमियों की बर्बादी के साथ ही जंगली जानवरों या पौधों पर संकट मंडरा रहा है। उत्तर प्रदेश व पश्चिम बंगाल के दलदली क्षेत्रों में 'दलदली हिरण' पाया जाता है। यह हिरण भी कम हो रहा है। इस प्रजाति के हिरणों की संख्या लगभग एक हजार बची है। इसी प्रकार तराई वाले क्षेत्रों में पाई जाने वाली फिशिंग कैट यानी मच्छीमार बिल्ली पर भी बुरा असर पड़ रहा है। इसके साथ ही गुजरात के कच्छ क्षेत्र में जंगली गधा भी खतरे में है।

असम के काजीरंगा और मानव दलदलीय क्षेत्रों से जुड़ा एक सींग वाला भारतीय गैंडा भी प्रायः विलुप्त प्राणियों की श्रेणी में शामिल है। इसी प्रकार ओटर, गैंजेटिक डॉल्फिन, डूरोंग, एशियाई जलीय भैंस जैसे अनेक जीव जो नम भूमियों से जुड़े हैं, खतरे में हैं।

रेंगने वाले जीव जैसे समुद्री कछुआ, घड़ियाल, मगरमच्छ, जैतूनी रिडली और जलीय मॉनीटर पर भी नम भूमियों के प्रदूषित होने के कारण संकट मंडरा रहा है। जीवों के अतिरिक्त कुछ वनस्पतियां भी नम भूमि के संकट से प्रभावित हो रही हैं।

नम भूमियों के संरक्षण के प्रयास

कई सारी वनस्पतियों, सरीसृपों, पक्षियों और जनजातियों आदि की निवास स्थली नम भूमियों के बढ़ते प्रदूषण, बिगड़ती जलवायु, विकास के दुष्परिणामों आदि के कारण अपना स्वरूप खोती जा रही हैं। भारत में नम भूमि के संरक्षण के लिए पर्यावरण मंत्रालय द्वारा 1987 से एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभी तक 15 राज्यों में 27 नम भूमि क्षेत्र चिन्हित किए गए हैं। इनके अंतर्गत पंजाब में कंजली और हिरके, उड़ीसा में चिल्का, मणिपुर में लॉकटक, चंडीगढ़ में सुखना और हिमाचल में रेणुका क्षेत्र हैं। इन जगहों में संरक्षण और उनके बारे में जागरूकता लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अलावा केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, सुन्दरवन, मनास और काजीरंगा को 'अंतर्राष्ट्रीय विरासत' का दर्जा दिया गया है। इन क्षेत्रों में देश-विदेश के मेहमान पक्षी आते हैं। इसलिए इनको बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं।

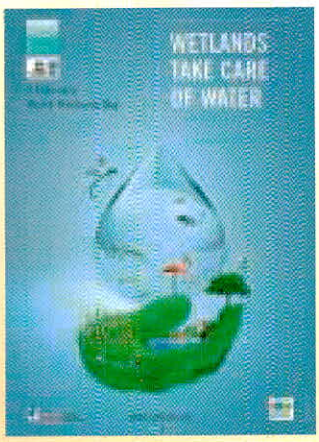

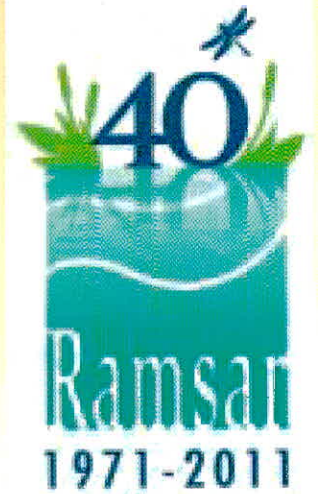

2 फरवरी, 1971 को 70 राष्ट्रों ने दलदलों पर एक सम्मेलन ईरान के रामसर शहर में बुलाया था। इसी दिन नम भूमियों के संरक्षण के लिए वहां एक अंतर्राष्ट्रीय संधि हुई थी जिसे रामसर संधि भी कहा जाता है। अब इस संधि पर 163 देशों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

नम भूमियां व्यापक स्तर पर आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक आधार रही हैं। इसीलिए 2 फरवरी, 1971 को 70 राष्ट्रों ने दलदलों पर एक सम्मेलन ईरान के रामसर शहर में बुलाया था। इसी दिन नम भूमियों के संरक्षण के लिए वहां एक अंतर्राष्ट्रीय संधि हुई थी जिसे रामसर संधि भी कहा जाता है। अब इस संधि पर 163 देशों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं। यह संधि विश्व के दुर्लभ व महत्वपूर्ण नम भूमियों को रामसर स्थल के रूप में चिन्हित करने के साथ ही अनेक अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर नम भूमियों के संरक्षण के लिए जागरूकता का प्रसार करती है। इसीलिए 1997 से प्रत्येक वर्ष 2 फरवरी को विश्व नमभूमि दिवस

सारणी 1 : भारत में रामसर संरक्षित नमभूमियों की सूची

क्रमांक	नमभूमि	अधिसूचित	राज्य	क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)
1	अष्टमुडी नम भूमि	19.08.2002	केरल	61,400
2	भितरकनिका मैंग्रोव नम भूमि	19.08.2002	उड़ीसा	65,000
3	भोज	19.08.2002	मध्य प्रदेश	3,201
4	चन्द्रताल नम भूमि	08.11.2005	हिमाचल प्रदेश	49
5	चिल्का	01.10.1981	उड़ीसा	1,16.500
6	डिपोल बिल	19.08.2002	असम	4,000
7	पूर्वी कोलकाता नम भूमि	19.08.2002	पश्चिम बंगाल	12,500
8	हरिका ढील	23.03.1990	पंजाब	4,100
9	होकेरा नम भूमि	08.11.2005	जम्मू एवं कश्मीर	1,375
10	कंजिली	22.01.2002	पंजाब	183
11	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	01.10.1981	राजस्थान	2,873
12	कौलुरू झील	19.08.2002	आंध्र प्रदेश	90,100
13	लॉकटक झील	23.03.1990	मणिपुर	26,600
14	नलसरोवर पक्षी अभयारण्य	24.09.2012	गुजरात	12,000
15	पांइट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य एवं पक्षी विहार	19.08.2002	तमिलनाडू	38,500
16	पोंग बांध झील	19.08.2002	हिमाचल प्रदेश	15,662
17	रेणुका नम भूमि	08.11.2002	हिमाचल प्रदेश	20
18	रोपर	22.01.2002	पंजाब	1,365
19	रुद्रसागर झील	08.11.2002	त्रिपुरा	240
20	सांभर झील	23.03.1990	राजस्थान	24,000
21	साथामुकोटा झील	19.08.2002	केरल	373
22	सुरिनसर-मान्सर झील	08.11.2005	जम्मू एवं कश्मीर	350
23	सौमित्री	19.08.2002	जम्मू एवं कश्मीर	12,000
24	ऊपरी गंगा नदी	08.11.2005	उत्तर प्रदेश	26,590
25	बेमनाड-कोल नम भूमि	19.08.2002	केरल	1,51,250
26	वुलर झील	23.03.1990	जम्मू एवं कश्मीर	18,900

के रूप में मनाया जाता है जिसके अंतर्गत व्यापक रूप से आम लोगों को नम भूमियों के महत्व और लाभों के प्रति जागरूक करना है। वर्ष 2013 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने जल सहयोग का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया। 2 फरवरी, 2012 को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय नम भूमि दिवस का विषय भी नम भूमि और जल प्रबंधन से संबंधित रखा गया।

अभी तक विश्व भर की 2062 नम भूमियों को रामसर क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया गया है जो करीब 19,72,58,541 हेक्टेयर में फैली हुई हैं। इन क्षेत्रों में से 35 प्रतिशत क्षेत्र पर्यटन संभावित क्षेत्र हैं। इनमें से 45 नम भूमियों को विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है। इस सूची में भारत का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान भी शामिल है।

भारत ने इस समझौते पर 1981 में हस्ताक्षर किए और यहां के केवल 26 नम भूमियों को रामसर संरक्षित दलदलों का दर्जा हासिल है। जो 6,89,131 हेक्टेयर में फैली हैं।

उड़ीसा की चिलका झील और राजस्थान का केवलादेव राष्ट्रीय पार्क रामसर के तहत संरक्षित होने वाले पहले दो दलदल थे। भारत का सबसे बड़ा रामसर साइट भीमबंद-कोल वेटलैंड (1512.5 वर्ग कि.मी.) केरल में है।

वैसे हमारे देश में भी नम भूमि पर्यटन पर ध्यान दिया जा रहा है। इसके तहत गुजरात राज्य में पिछले तीन सालों से 'ग्लोबल बर्ड वॉचर्स कांफ्रेंस' की जा रही है। ऐसे आयोजनों का उद्देश्य यही होता है कि नम भूमियों को बढ़ते प्रदूषण, बदलती जलवायु और अनियंत्रित विकास से उत्पन्न खतरों आदि से बचाया जा सके ताकि इन क्षेत्रों में हमेशा जीवन के विविध रूप मुस्कुराते रहें।

संपर्क करें :
श्री नवनीत कुमार गुप्ता
परियोजना अधिकारी,
विज्ञान प्रसार, सी-24,
कुतुब संस्थानिक क्षेत्र
नई दिल्ली -110016

जल पर दोहे

बिना जल के होय नहीं, कोई-सा भी काम।
इसे साफ रखने हेतु, उपाय करें तमाम।।

अगर मिले नहीं जल तो, जीवन है बेकार।
इसको बचाने के लिए, रहें आप तैयार ।।

बना हुआ है जल यहां, जीवन का आधार।
न हो जल के लिए रमेश, आपस में तकरार।।

कीजिए जल का 'रमेश', उतना ही उपयोग।
लगता जितना आपको, बिठा ऐसा संयोग।।

सच कहते हैं जल बना, जीवन की पहचान।
व्यर्थ बहाकर करें ना, इसका अब नुकसान।।

रखो बचाकर जल सदा, इसमें जीवन धार।
आपके जीवन की ये, खींचे है पतवार।।

जल प्रदूषण न बढ़े कभी, रखें इसका ध्यान।
अगर रोका नहीं इसे, खतरे में फिर जान।।

न हो प्रदूषित जल 'रमेश', रहे सदा ही साफ।
करें जो प्रदूषित जल को, करें ना उसे माफ।।

बचाकर रखें धन तभी, जब आवे संताप।
जल भी है धन सभी का, रखें बचाकर आप।।

जो अधर सदा रहे जी, प्यास से बदहाल।
प्यास बुझाकर मत कर, कोई नया सवाल।।

कुंआ, नदी, ताल, पोखर, छोड़ा सबने साथ।
कर दिया है पानी ने, हम सभी को अनाथ।।

कैसे बचे पानी अब, करें यह मंत्र याद।
ठान लें गर हर जन यह, करेंगे न बरबाद।।

जब था पानी खूब ही, जान सके ना मोल।
अब कर रहे हो 'रमेश', इस हेतु तुम किकोल।।

बन गया है जल संकट, सबके लिए विकराल।
हो गए हैं सब खाली, कुएं, नदी और ताल।।

पानी यदि बचाने का, करें हर जन प्रयास।
न तरसेंगे पानी को, रखिए यह विश्वास।।

मचा हुआ चहुँ ओर ही, पानी का संत्रास।
किया नहीं है इस हेतु, पहले से प्रयास।।

पानी अगर मिले नहीं, बचेगी नहीं जान।
इस हेतु होगा एक दिन, युद्ध बड़ा श्रीमान।।

देखो पानी का हुआ, कैसा यारों हाल।
हो रही त्राही-त्राही, मच रहा है बवाल।।

पर्यावरण पर दोहे

हरे पेड़ न हरें कभी, उनको सदा बचाय।
सच्चे हैं ये परम मित्र, इनको गले लगाय।।

देने लगे अगर यहां, हर आदमी ध्यान।
कटने न देंगे 'रमेश', पेड़ हरे श्रीमान।।

पेड़ कट गए सभी तो, भुगतोगे परिणाम।
पानी न बरसेगा तो, मचेगा कोहराम।।

ओढ़कर हरियाली ये, धरती करे श्रृंगार।
आवे पर्यावरण में, फिर सुनहरी बहार।।

करो न पेड़ पौधों से, आप कभी खिलवाड़।
अगर करोगे कर देंगे, सूखा ये आषाढ़।।

जिस दिन यह बात 'रमेश', करेंगे स्वीकार।
पेड़-पौधे हैं सबके, अच्छे रिश्तेदार।।

अपने आंगन में सभी, पेड़ लगाए 'रमेश'।
न रहे पर्यावरण का, दूषित फिर परिवेश।।

छायादार पेड़ों से, मिले सदा ही छांव।
बैठकर राहगीर के, जलेंगे नहीं पांव।।

बोले नहीं चुप रहते, फिर भी उनमें जान।
पेड़-पौधे देते हैं, हम सबको सम्मान।।

पेड़ करते नहीं कभी, कोई भी नुकसान।
मगर स्वार्थ के खातिर, काटे उसे इंसान।।

पेड़-पौधों से 'रमेश', करोगे छेड़-छाड़।
फिर पानी के लिए यहां, चलेगी मार-धाड़।।

संपर्क करें :
श्री रमेश मनोहरा
शीतला गली, जावरा, जिला - रतलाम - 457 226, मध्य प्रदेश